Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.28-33

शिक्षा सामाजिक एवं समग्र विकास में अध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका

डॉ. हरीश कुमार, ऐसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग,
जे. जे. टी. यू. विश्वविद्यालय राजस्थान भारत

वर्तमान समय मे शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है आज शिक्षक केवल पुस्तकीय ज्ञान का प्रदाता न होकर पथ प्रदर्शक भी है जीवन का मार्गदर्शन करने वाला है परंतु वर्तमान में अब शिक्षक के पद का दायरा सीमित हो रहा है इसे केवल विद्यालयी शिक्षण तक समेट दिया गया है प्रशासकीय व्यवस्था में वह अकेले शासकीय कर्मचारी जैसा बन कर रह गया है जबकि आवश्यकता है इसे व्यापक बनाने की माना जाता है कि यदि शिक्षक नही होता तो शिक्षण की कल्पना भी नही की जा सकती थी शिक्षण की आधारशिला शिक्षक के द्वारा ही रखी जाती है प्राचीन काल से ही शिक्षक का दर्जा बहुत ही उच्च और अहम रहा है वह समाज का आदर्श होता था शिक्षक के स्वरूप में ईश्वर तक की कल्पना की गई ''गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः गुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः'' श्लोक में गुरु की तुलना ब्रह्मा से की गई है जिस प्रकार ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता माना जाता है उसी प्रकार शिष्य के सम्पूर्ण जीवन के निर्माण की बागडोर शिक्षक के हाथों में होती है। गुरु का कार्य शिष्य का जीवन निर्माण होता है,शिक्षक ज्ञान रूपी आहार देकर शिष्य को जीवन संघर्ष के योग्य बनाता है उसका चरित्र निर्माण करता है इसलिये उसकी तुलना विष्णुजी के रूप मे भी की गई, शिष्य के दुर्गुण दूर करने के कारण उसकी बुराइयों के संहार करने के कारण शिक्षक को महेश भी कहा गया है। शिक्षक समाज के आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है किसी भी देश समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण यदि दूसरे शब्दों में कहे तो शिक्षक समाज का आईना होता है छात्र और शिक्षक का संबंध केवल विद्यालयी शिक्षा देने तक सीमित नही रहता वल्कि शिक्षक हर मोड़ पर एक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाहन करता है विद्यार्थी में सकारात्मक सोच विकसित करता है उसे सदा आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देता है और स्वयं को भी उदाहरण के तौर प्रस्तुत करता है एक सफल जीवन यापन हेतु शिक्षक अनिवार्य प्रक्रम है संसार मे भारत ही एकमात्र ऐसा राष्ट्र है जहाँ शिष्यो को विद्यालयी ज्ञान के साथ उच्च मूल्यों को स्थापित करने वाली नैतिक व चारित्रिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है जो छात्र के सर्वांगीण विकास में सहयोगी होती है

मुख्य शब्द– शिक्षक, सामाजिक विकास, समग्र विकास।

गुरु का शाब्दिक अर्थ होता ही है अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला गु अर्थात अंधकार और रु का मतबल नष्ट करने वाला है परंतु बदलाव का प्रभाव सम्पूर्ण व्यवस्था पर पड़ता है शिक्षक और शिक्षा इससे अछूते नही है शिक्षक पथ प्रदर्शक है ज्ञान प्रदाता है उसका आचरण और व्यवहार समाज के लिए अनुकरणीय रहा है तो निश्चित रूप से ये प्रश्न उठना लाजिमी है कि शिक्षकीय गरिमा को लोग शनैः शनैः विस्मृत क्यों करते जा रहे हैं शिक्षक की उपेक्षा आज हमारे लिए कमजोरी बन रही है तथा समाज को घातक सिद्ध हो रही है फिर चाहे हम लौकिक शिक्षक की बात करे या फिर किन्ही अन्य गुरूओं की राष्ट्र निर्माण में एक शिक्षक का योगदान जितना होता है उतना शायद ही किसी का होता हो क्योंकि राष्ट्र की उन्नति में प्रत्येक क्षेत्र मे उसके छात्रों का योगदान रहता है कोई राजनेता, अभिनेता, खिलाड़ी, लेखक, डॉक्टर या फिर इंजीनियर की भूमिका में अपने अपने क्षेत्र में राष्ट्र उन्नति को दिशा दे रहा होता है आधुनिक दौर में शिक्षक की भूमिका और भी चुनौतीपूर्ण हो गई क्योंकि अब छात्र सजग, कुशल और अधतन रहता है जिसके सामने खुद को कुशलता और तत्परतापूर्वक प्रस्तुत करना किसी कला से कम नही है उनके सामने शिक्षक का दायित्व बढ़ जाता है क्योंकि उसे न केवल बौद्धिक, भौतिक, मनोवैज्ञानिक, शरीरिक विकास करना है अपितु सामाजिक, चारित्रिक एवं संवेगात्मक विकास भी तय करना है। स्वयं के आचरण द्वारा छात्रों के मानस पटल पर अमिट अविस्मरणीय छाप भी छोड़नी होती है उसे अपने प्रेम,अनुभव,शिक्षा, समर्पण ,सृजन, त्याग व धैर्य से छात्रों की मूलभावना जानकर उसे सही दिशा देने का कार्य करना होता है क्योंकि यही भविष्य के नागरिक होते है शिक्षक का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार शिक्षा सम्पूर्ण जीवन प्राप्त होती रहती है वैसे ही शिक्षण भी सतत चलने वाली

अंतहीन प्रक्रिया है व्यक्ति पूरे जीवन कुछ न कुछ सीखता रहता है और उसे कोई न कोई सिखाने वाला मिलता ही है चाहे औपचारिक शिक्षण हो या फिर अनोपचारिक शिक्षण। शिक्षक के संबंध में कहा गया कथन अपनी सार्थकता स्वमेव सिद्ध करता है ''गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ सम गढ गढ काढ़े खोट,

शिक्षा समाज के लिए आवश्यक व अनिवार्य तत्व है ये कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि भोजन पानी जितनी आवश्यक शिक्षा भी है क्योंकि इसी के द्वारा हम जीवन कौशल सीखते हैं परंतु वर्तमान में शिक्षा का स्वरुप दिन प्रतिदिन बदरूप होकर बदलता जा रहा है शिक्षा नैतिक जीवन की आधारशिला न होकर केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र बनती जा रही है यह एक कटु सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य अच्छी नौकरी प्राप्त करना रह गया है जिस तरह शिक्षा बदल रही है शिक्षक भी उससे अप्रभावित नही है अब वह पथप्रदर्शक के स्थान पर निर्देशकर्ता बनकर रह गया है चूंकि शिक्षक भी समाज का एक अभिन्न अंग है समाज के बदलाव उसे भी प्रभावित करते है उसकी सोच भी व्यावसायिक होती जा रही है वह भी एक हाथ दो एक हाथ लो कि पद्धति का अनुसरण करने लगा है उसी व्यावसायिकता के चलते शिक्षा का स्तर दिनोदिन गिरता जा रहा है अधिक धन कमाने की लालसा ने शिक्षा जैसे दान के कार्य को व्यापार का रूप दे दिया है ऐसी शिक्षा से धन तो प्राप्त हो जाएगा परंतु नैतिक पतन तो अवश्यम्भावी है आज सब भौतिक सुख सुविधाओं में इतने तल्लीन हो गए है कि उन्हें खुद के दायित्व नजर नही आते न ही समाज के प्रति कर्तव्य आर्थिक उन्नति ही विकास का पर्याय होती जा रही है इस प्रकार का बदलाव समाज के लिए सकारात्मक न होकर नुकसानदेह ही होता है क्योंकि शिक्षा और शिक्षक किसी भी समाज की धुरी होती है अगर वही टूट गई तो हम सभ्य समाज की कल्पना भी नही कर सकते इसकी परिणति आये दिन शैक्षिक संस्थानों में देखने को मिलती रहती है कभी प्रोफेसर सभरबाल के रूप में तो कभी अन्य के रूप में प्रश्न यही है कि हमारे शिक्षक के प्रति सम्मान की इतनी मजबूत नीव हिलने कैसे लगी समाज के दिशा निर्धारक इस व्यक्तित्व को शनैःशनैःविस्मृत क्यो किया जा रहा है।

आज शिक्षा के गिर रहे स्तर के लिए निश्चित रूप से शिक्षक को जबाबदेह ठहराया जाता है परंतु हमे यह देखना होगा कि क्या यह पूर्णतः सत्य है तो हम पाएंगे कि समाज की शिक्षा के प्रति व्यवसायीकरण की सोच तथा शिक्षक के शैक्षिक कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यो में समायोजित करने भी इसका एक प्रमुख पहलू है यदि शिक्षक प्रारंभिक समय से ही शिक्षण पर पूर्ण ध्यान केंद्रित नही कर पायेगा तो उसके आगामी प्रतिफल प्राप्त नही किये जा सकते है। छात्रों द्वारा जीवन में कुछ अच्छा करने पर आज भी शिक्षकों का हृदय गर्व से भर जाता है परंतु समय में वदलाव स्वरूप छात्र व शिक्षक के बीच जो विश्वास का पल बना था वह कमजोर हुआ है वे एक दूसरे को शंका व संदेह की दृष्टि से देखने लगे है यदि हम कहे तो इस गुरु शिष्य परंपरा को कमजोर करने में शिक्षक और छात्र दोनों का योगदान है। कुछ शिक्षकों की कार्य के प्रति उदासीनता और बच्चों की भौतिकवादी सोच व दिशाहीनता ये सभी शिक्षा स्तर की गिरावट के लिए उत्तरदायी है जरूरी ये है कि दोनों अपनी अपनी जिम्मेदारियों को समझे और ईमानदारी से उसका निर्वाहन करें शिक्षक और छात्र के बीच की दूरी बढ़ने से धीरे धीरे उनके बीच की आत्मीयता और सम्मान कम होते जा रहे हैं जो भविष्य के बड़े संकट के संकेत है समय रहते इस बात पर ध्यान केंद्रित नही किया तो एक बड़ा संकट हमारे सामने होगा इसका एक पक्ष ये भी है कि वर्तमान समाज शिक्षकों की असुविधाओं को देखकर भी उनके निराकरण में उदासीनता दिखाता है शिक्षकों के कंधों पर बच्चों के भविष्य निर्माण का भार तो सौप देता है लेकिन शिक्षकों के प्रति अपने दायित्वों को भूल जाता है इन्ही कारणों से शिक्षक के सामाजिक स्थान एवं दर्जे में भारी गिरावट आ गई है समाज और शिक्षक के बीच की दूरी सम्पूर्ण व्यवस्था में अव्यवस्था पैदा कर रही है। यह स्थिति न तो छात्र न शिक्षक और न ही राष्ट्र के हित में है आज के वैश्विक दौर में हर इंसान आर्थिक हितों की सोच की ओर अग्रसर हो रहा है। शिक्षक भी इससे अप्रभावित नही है ऐसे में कई बार ऐसे रास्तें चयन हो जाते है जो नैतिक रूप से सही नही कहे जा सकते यही एक कारण भी है कि तमाम सरकारी प्रयासों के बावजूद शिक्षा का व्यवसायीकरण होता ही जा रहा है संस्थान केवल प्रमाण पत्र वितरण केंद्र बनते जा रहें है। समाज का नैतिक स्तर लगातार गिर रहा है शिक्षा व्यवसाय बनती जा रही हैं परंतु शिक्षकों को विचार करना होगा कि वे केवल शासकीय कर्मचारी नही है अपितु उनके ऊपर समाज के नैतिक उत्थान की महत्वपूर्ण जबाब देही भी है शिक्षक अपनी गरिमा समझें यदि वह खुद को अकेले कर्मचारी मानने लगेंगे तो इससे बड़ा दुर्भाग्य हो ही नही सकता। शिक्षकों को अपने अतीत के गौरव को समझना चाहिए साथ ही उसे खो देने के कारणों पर विचार करके स्वयं में बदलाव लाना चाहिए नही तो यह केवल शिक्षक का पतन नही होगा बल्कि सारे राष्ट्र को इसकी कीमत चुकानी होगी। आज शिक्षा

व्यवस्था की स्थिति के लिए राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक सभी स्तरों पर चिंतन करने और उससे निकलकर आये तथ्यों का निराकरण जरूरी है।

राष्ट्र निर्माता है वह जो, सबसे बड़ा इंसान है,
किस में कितना ज्ञान है, बस इसको ही पहचान है"।

एक राष्ट्र को बनाने में एक शिक्षक का जितना सहयोग एवं योगदान है, उतना शायद किसी और का हो ही नहीं सकता। क्योंकि एक राष्ट्र को उन्नति के चरम शिखर पर ले जाते हैं उसके राजनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति, लेखक, अभिनेता, खिलाड़ी आदि और परोक्ष रूप से इन सबको बनाने वाला कौन है? एक शिक्षक वर्तमान समय में विद्यार्थियों के संदर्भ में एक शिक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। उसके अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे आज–कल विद्यार्थी बहुत ही सजग, कुशल, अद्यतन (Updated) होने के साथ–साथ बहुत अस्थिर और अविश्वासी भी होते जा रहे हैं। इसके कारण चाहे जो कुछ भी हो परंतु एक शिक्षक को आज के ऐसे ही विद्यार्थियों को उचित प्रशिक्षण, सदुपयोगी शिक्षण और सटीक कल्याणकारी, दूरगामी मार्गदर्शन प्रदान करते हुए उन्हें भावी देश के कर्णधार, जिम्मेदार देशभक्त नागरिकों में परिणित करना है। एक शिक्षक की जिम्मेदारी बहुत अधिक होती है। क्योंकि उसे ना केवल बच्चों का बौद्धिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक ,शारीरिक विकास करना है अपितु सामाजिक, चारित्रिक, एवं सांवेगिक विकास करना भी आज शिक्षक का ही कर्तव्य है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

बंद आंखों के सामने हमारा चेहरा यानि एक शिक्षक का चेहरा उन्हें दिखाई दे। यह एक चुनौती भरा कार्य है। परंतु सच्चा शिक्षक वही है जिसे उसके विद्यार्थी जीवन भर अपना गुरु मानते रहें न कि सिर्फ विद्यालय प्रांगण के अंदर तक यह सीमा शेष रह जाए। ऐसा करने के लिए सबसे पहले एक शिक्षक को स्वयं को अनुशासित करते हुए चारित्रिक, नैतिक ,धार्मिक आदि गुणों का विकास करना होगा। क्योंकि इन सब के बिना हमारी आंतरिक भावनाओं का उदय नहीं हो सकता, शिक्षक को अधिक से अधिक बच्चों के साथ इंटरेक्शन यानि वार्तालाप करना चाहिए ताकि उनके व्यक्तित्व पर यथासंभव अपना प्रभाव डाल सके। अपने अनुभव, अपनी शिक्षा, अपने प्रेम, समर्पण अपनी सृजन शक्ति, अपने त्याग, अपने धैर्य आदि का पूर्ण प्रदर्शन करते हुए बच्चों के भी अनुभव, उनके मूल विचार, उनकी भावनाओं आदि को जानने का प्रयास करें और यथासंभव उन्हें अभिप्रेरित करने का प्रयास करें। क्योंकि इन्ही सब विद्यार्थियों में से ही भविष्य में हमारे देश का नाम रोशन करने वाले कई नागरिक पैदा होंगे। आदर्श शिक्षक का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक बात और कि जिस प्रकार शिक्षा एक अंतहीन प्रक्रिया है क्योंकि एक अध्यापक जब अध्यापकीय अहर्ताओं, योग्यताओं से पूर्ण हो जाता है, तब वह शिक्षा देना प्रारंभ करता है। मैं यहां यह पूछना चाहता हूं कि जिन शिक्षकों को नौकरी नहीं मिल पाती तो क्या वह शिक्षा प्रदान नहीं करते? और जो शिक्षक रिटायर हो जाते हैं तो क्या वे रिटायरमेंट के बाद शिक्षा प्रदान नहीं करते? क्या वह कहते कि अब हम रिटायर हो चुके हैं अब हम शिक्षा प्रदान नहीं करेंगे, शिक्षण प्रदान नहीं करेंगे? ऐसा करने में हम सक्षम नहीं है। नहीं, ऐसा कदापि नहीं है। इसके विपरीत एक शिक्षक तो बिना किसी मांग के, बिना कहे अपना सर्वस्व ज्ञान अनुभव में डुबोकर प्रदान करने के लिए सदैव समाज के सामने तत्पर रहता है। वास्तव में एक शिक्षक की वर्तमान संदर्भ में भूमिका यह है कि जो एक विद्यार्थी के लिए उचित हो, कल्याणकारी हो, दूरगामी हो, प्रायोगिक हो, धनोपार्जन में सहायक हो ऐसी शिक्षा को निरंतर प्रदान करते रहना। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक सजग, उदात्त चरित्र, धार्मिक नैतिकता परिपूर्ण शिक्षक की आवश्यकता है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को हम ऐसे भारतीय नागरिक बनाने में सफल हो सकें जो विश्व में भारत का नाम रोशन कर सकें और पुनः भारत को 'जगतगुरु' की उपाधि प्राप्त करवा सके। हम सब की भी यही अभिलाषा है। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहाँ की प्रतिभा दब कर रह जायेगी बेशक किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्व को अधोरेखांकित करते हैं। एक शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षकों द्वारा प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम के साथ–साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ–साथ ऐसे भी शिक्षक हैं जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को

कलंकित कर रहे हैं, ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है, जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है और धन के अभाव से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है। आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती है। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी। गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं जो एक शिक्षार्थी में उच्च आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु के प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता क्योंकि वह ना सिर्फ हमको सही आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

शिक्षक विद्यालय को समुदाय से जोड़ने की अहम कड़ी हैं–

अभिभावकों को विद्यालय से जोड़ने में शिक्षकों ने अहम भूमिका निभाई। वे बच्चों की प्रगति के बारे में अभिभावकों को बताते और उनके सहयोग के क्षेत्रों को भी रेखांकित करते थे। मसलन घर पर बच्चों को खुद से बैठकर पढ़ने का समय देने और पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने जैसे बुनियादी मुद्दों पर बात करते थे। अभिभावकों की बैठक में रोचक प्रयासों द्वारा उनकी भागीदारी को सतत बनाए रखने जैसे प्रयास किये जा सकते हैं। अगर विद्यालय में अभिभावकों के आने पर शिक्षक साथी उनके साथ अगर सिर्फ शिकायतें साझा करें, तो शायद वे दोबारा स्कूल आने से कतराएंगे। यही बात शिक्षकों के संदर्भ में भी लागू होती है जिनके बच्चे अन्य विद्यालयों में पढ़ते हैं। वे भी सकारात्मक व्यवहार की उम्मीद करते हैं। इसके साथ ही व्यावहारिक समस्याओं को व्यावहारिक तरीके से हल करना जरूरी होता है। ऐसे में समुदाय का सहयोग मिलना बहुत सारी समस्याओं के समाधान में मदद भी करता है।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में परिवर्तन शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का नेतृत्व करना–

अध्यापकों की शिक्षा के लिए राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाः व्यासायिक और सहदय शिक्षक तैयार करने के लिए (एन.सी.टी.ई.) (नेशनल कौंसिल फॉर टीचर एजुकेशन, 2009) एक व्यावसायिक कार्यबल का विकास करने के महत्व पर जोर देती है। व्यावसायिक विकास एक जीवन–पर्यन्त प्रक्रिया है। और यह व्यावसायिक दक्षता का विकास करने में मुख्य तत्व है। डिस्ट्रिक प्राइमरी एजुकेशन प्रोग्राम एंव सर्व शिक्षा अभियान से व्यावसायिक विकास प्रदान करने के लिए कई स्थल उपलब्ध कराए हैं। इसके अलावा, कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन (सीटीई) और कुछ गैर–सरकारी संगठन शिक्षकों के लिए सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करते हैं। विकास न केवल सेवारत प्रशिक्षण के माध्यम से बल्कि प्रशिक्षक के नेतृत्व वाले वर्कशॉपों, क्लस्टर रिसोर्स सेंटर (सीआरसी) बैठकों, गलियारे में वार्तालाप, समक्ष प्रशिक्षण, सामूहिक शिक्षा गतिविधियों आदि के माष्यम से भी किया जाता है। एक विद्यालय प्रमुख के रूप में आपकी भूमिका में शिक्षकों को अपने कार्य में सुधार करने के लिए हमेश तत्पर रहना चाहिए।

कक्षा कक्ष में अपनाई जाने वाली विधियां–

बच्चों में ज्ञान की समझ विकसित करने, कक्षा कक्ष प्रबंधन, प्रभावी छात्र शिक्षक संवाद, एवं निर्देशों की उत्तमता, संरचित अध्यापन एवं सीखने पर ज़ोर देने वाली गतिविधियों के दृष्टिकोण से इन कार्यविधियों का सर्वाधिक महत्व है। इसके लिये छात्रों एवं अध्यापकों की कक्षा कक्ष में नियमित उपस्थिति पूर्वप्रतिबंध है। आईसीटी समर्थित शिक्षण और अधिगम के संदर्भ में सीखने की प्रक्रिया के परिणामों में स्पष्ट रूप से प्रत्येक कक्षा और प्रत्येक विषय के लिए संभावित शिक्षण परिणामों पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि यह शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों के द्वारा आसानी से समझा जा सके और इसे माता–पिता और समुदाय के बीच व्यापक रूप से प्रचारित किया जा सके। समझ के साथ पठन के लिए अध्ययन के महत्व पर बल देने के एक प्रारूप के साथ वर्ष 2014 में सरकार के द्वारा शुभारंभ किए गए पढ़े भारत बढ़े भारत हेतु मजबूत बुनियाद की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अध्ययन को रोचक और लोकप्रिय बनाने के क्रम में सरकार ने 2015 में राष्ट्रीय अविष्कार अभियान का शुभारंभ किया। इस पहल के माध्यम से विद्यालयों के पास आई.आई.टी और एन.आई.टी जैसे संस्थानों से परामर्शदाता के तौर पर अनुभव प्राप्त करने के अवसर होते हैं। हाल ही में प्रारंभ किए गये अटल अभिनव अभियान और अटल टिंकरिंग लैब से छात्रों के बीच महत्वपूर्ण विश्लेषण, सृजनात्मकता और समस्या को सुलझाने जैसी गतिविधियों को बल मिलेगा। देश के सभी सरकारी माध्यमिक विद्यालयों को आई.सी.टी. से लैस किया जा रहा है ताकि बच्चों को पढ़ाने में आई.सी.टी. का लाभ

लिया जा सके और उनमें सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी साक्षरता में भी सुधार किया जा सके। द नेशनल रिपोजिटरी ऑफ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सिस और हाल ही में प्रारंभ किया गया ई–पाठशाला विद्यालय शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी डिजिटल और डिजिटल योग्य संसाधनों को एक साथ एक मंच पर ला रहा है।

मूल्याकंन और आंकलन–

एक छात्र की अध्ययन प्रगति का आकलन करना शिक्षक की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक है। कक्षा में छात्रों के नियमित और निरंतर मूल्यांकन से अभिप्राय बच्चों और माता–पिता को प्रतिक्रिया देना, शिक्षक को प्रतिक्रिया और बच्चों के बीच अध्ययन समस्याओं के समाधान के लिए हल निकालना है। अध्ययन मूल्यांकन तंत्र पर आधारित एक शैक्षिक वातावरण वाली कक्षा में ये सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षक और छात्र दोनों ही सीखने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमें क्या मूल्यांकन करना है इसमें सुधार किया जा सकता है। छात्र अपने अध्ययन में कितनी प्रगति कर रहे हैं और इसके साथ–साथ शिक्षा के संपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के मामले में व्यवस्था का निष्पादन कैसा है इसके लिए मूल्यांकन पर आधारित कक्षा के साथ व्यापक स्तर पर उपलब्धि सर्वेक्षण को जानने की भी आवश्यकता होती है। सरकार ने एक प्रक्रिया की पहल की है जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन किया जाएगा। इसमें सरकारी विद्यालयों, सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय और निजी विद्यालय शामिल होंगे। इस सर्वेक्षण का प्राथमिक प्रायोजन निर्धारित अध्ययन लक्ष्यों की तुलना में छात्रों के प्रदर्शन को समझने के लिए विद्यालयों को एक अवसर प्रदान करना है। परिणामों के आधार पर विद्यालय सीखने के स्तर में सुधार करने के लिए एक विद्यालय स्तर की योजना तैयार करेंगे। इस तरह के सर्वेक्षण से शिक्षण परिणामों को सुधारने की दिशा में एक सकारात्मक परिवेश तैयार होगा। शिक्षकों और छात्रों की प्रतिक्रियाएं शीघ्रता से मिलेगी ताकि वे शिक्षण अंतरालों के समाधान के लिए समय से कार्रवाई कर सके, एक समयावधि के भीतर छात्रों के प्रदर्शन को समझ सकें और शैक्षिक व्यवस्था की स्थिति के बारे में पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों शैक्षिक प्रशासकों को एक व्यवस्थित प्रतिक्रिया प्रदान कर सकें। यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक है।

विद्यालय प्रभावशीलता–

विद्यालयों के प्रभावी ढंग से प्रदर्शन के लिए विद्यालय प्रमुख का सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है। भारत सरकार ने राज्य सरकारों को प्रधानाचार्यों के लिए एक पृथक कैडर बनाने के लिए कदम उठाने की सलाह दी है। एक पूर्णकालिक प्रधानाचार्य के क्षमता निर्माण से इस व्यवस्था को एक लक्षित तरीके से किया जा सकता है। भविष्य के विद्यालयों में प्रमुखों को प्रशिक्षण देने के लिए एनयूईपीए पर राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केंद्र ने एक प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया है, जिसे पूरे देश में वर्तमान में कार्यान्वित किया जा रहा है। राज्यों में भी नेतृत्व अकादमियों के गठन की योजना है जिससे उनके राज्यों की जरूरतों को पूरा किया जा सकेगा। विद्यालयों का विभिन्न आयामों में निरंतर मूल्यांकन किये जाने की आवश्यकता है ताकि सुधार की आवश्यकता का समावेशन किया जा सके। गुजरात में गुणोत्सव, मध्यप्रदेश में प्रतिभा पर्व, राजस्थान में सम्बलन और ओडिशा में समीक्षा जैसी पहलें बेहतर उदाहरण है। एनयूईपीए द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशाला सिद्दी नामक एक व्यापक विद्यालय मूल्यांकन प्रारूप को तैयार किया गया है और नवंबर 2016 में इसका शुभारंभ कर दिया गया है। यह आत्म–मूल्यांकन और तीसरे पक्ष के मूल्यांकन का एक घटक है। अपनी सुधार योजनाओं को कार्यान्वित करने और उन्हें बनाने के लिए विद्यालयों के द्वारा आत्म–मूल्यांकन का उपयोग किया जाएगा। छात्रों और शिक्षकों का समक्ष आधार डाटा बनाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। इससे बच्चों के एक कक्षा से अगली कक्षा में जाने की प्रक्रिया पर निगरानी रखी जाएगी और इस प्रकार से स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की पहचान के लिए प्रणाली को सक्षम बनाया जाएगा और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी पात्र बच्चे मध्याह्न भोजन, पाठ्य पुस्तकें और छात्रवृत्तियों को प्राप्त करने के साथ–साथ छात्र और शिक्षक की उपस्थिति की निगरानी भी की जाएगी।

विद्ययालय बुनियादी ढांचा–

सर्व शिक्षा अभियान और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से विद्यालय बुनियादी ढांचे के प्रावधानों के तहत उल्लेखनीय प्रगति की गयी है। एसएसए के प्रारंभ होने के बाद से 2.23 लाख प्राथमिक और करीब 4 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिए विद्यालय भवन तैयार किए गए हैं। प्रत्येक विद्यालय में छात्राओं और छात्रों के लिए एक पृथक कार्यात्मक शौचालय होने के प्रधानमंत्री के आह्वान पर राज्यों, संघशासित प्रदेशों, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र की इकाईयों और निजी संस्थानों ने सकारात्मक प्रक्रिया व्यक्त की है। स्वच्छ विद्यालय पहल के अंतर्गत 4.17 लाख शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है। शौचालयों

को स्वच्छ, कार्यात्मक और बेहतर बनाए रखने को सुनिश्चित करने की दिशा में भी कदम उठाए जा रहे हैं। आज हम विद्यालयों को मात्र इमारतों और कक्षाओं के रूप में ही नहीं देखते हैं, एक स्कूल में मूल शिक्षण स्थितियों के साथ–साथ इसमें बिजली की व्यवस्था, कार्यात्मक प्रयोगशाला और पाठन स्थल, विज्ञान प्रयोगशालाएं, कम्पयूटर प्रयोगशालाएं, शौचालय और मध्याह्न भोजन को पकाने के लिए एलपीजी कनेक्शन भी अवश्य होना चाहिए। सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों को सलाह दी जा चुकी है कि वह वर्तमान वर्ष में सभी माध्यमिक विद्यालयों में बिजली की व्यवस्था को सुनिश्चित करें जबकि शेष विद्यालयों को एक लघु अवधि की सीमा के भीतर शामिल किया जा सकता है।

सामुदायिक भागीदारी–

एक व्यापक और विविधता से भरे देश में निर्णय लेना और जवाबदेही का विकेन्द्रीकरण ही सफलता की कुंजी है। विद्यालय शिक्षा के मामले में समुदाय विद्यालय प्रबंधन समितियों के माध्यम से विद्यालय प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अब तक इन समितियों को विद्यालय भवन के निर्माण जैसी गतिविधियों के प्रावधानों में शामिल किया जा चुका है। इससे आगे बढ़ते हुए विद्यालय समितियों को मजबूत किये जाने की आवश्यकता होगी ताकि वे बच्चों के शिक्षण के लिए विद्यालय की जवाबदेही पर भी अपना नियंत्रण कर सके। माता–पिताओं और एसएमसी सदस्यों को कक्षावार शिक्षण लक्ष्यों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता होगी। एसएमसी बैठक, सामाजिक अंकेक्षण अथवा विद्यालय शिक्षा पर ग्राम सभा बैठकों जैसे प्रयासों को भी विद्यार्थी के अध्ययन में जोड़ने और उनका मूल्यांकन करने की आवश्यकता होगी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि माता–पिता और समुदाय के सदस्य आगे कदम बढ़ाते हुए अपने बच्चों के शिक्षण के लिए विद्यालयों की जवाबदेही पर नियंत्रण बना सकते हैं इसके लिए भाषा को आसानी से समझने के लिए शिक्षण लक्ष्यों को कक्षावार तैयार करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं और विद्यालयों के साथ–साथ इसके व्यापक प्रचार–प्रसार को प्रदर्शित करने की भी योजना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि–

1. शिक्षा अधिकार बिल 2005
2. लाल.आर.बी. (2004) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्वान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ
3. सक्सेना, एन.आर (2003) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामशास्त्रीय आधार, आर.लाल बुक डिपो मेरठ
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली
5. Ainscow, M., Booth, T. and Dyson, A. (2006) *Improving Schools Developing Inclusion*. Abingdon: Routledge.
6. Artiles, A., Kozleski, E., Dorn, S. and Christensen, C. (2006). 'Learning in inclusive education research: remediating theory and methods with a transformative agenda', *Review of Research in Education*, no. 30, pp. 65–108.
7. Causton-Theoharis, J. (2009) 'the golden rule of providing support in inclusive classrooms: support others as you would wish to be supported', *Teaching Exceptional Children*, vol. 42, no. 2, pp. 36–43.